REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2023

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

Khirod Chandra Mahto
Research Scholar (Ph.D),
Sainath University,Jirabar, Ranchi Jharkhand.

सारांश

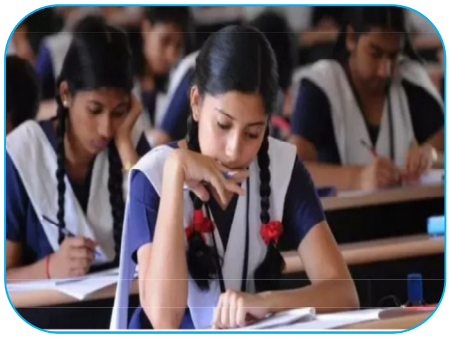

प्रस्तुत अध्ययन उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर आधारित है। यह विषय वर्तमान में एक अत्यंत ज्वलंत समस्या के रूप में सामने आ रहा है । संवेगात्मक बुद्धि अनेक घटकों के परस्पर अंतर्संबंधों का प्रतिफल है, जिनमें लिंग, विद्यालय का प्रकार, माध्यम, माता की शैक्षणिक योग्यता, पिता की शैक्षणिक योग्यता तथा क्षेत्र का प्रभाव पड़ता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था में प्रवेश कर चुके होते हैं, इस स्तर पर विद्यार्थी अनेकों प्रकार के संवेगों का अनुभव करता है, उनके संवेगों को पहचानना, उसे सही दिशा देना अत्यंत आवश्यक होता है क्योंकि संवेगात्मक अस्थिरता उसके व्यावसायिक महत्वाकांक्षा को भी प्रभावित करती है, फल स्वरूप इस अस्थिरता की स्थिति में वह अपने भविष्य हेतु उपर्युक्त योजना बनाने में सक्षम नहीं हो पाता है। वर्तमान समय में ऐसे विषयों पर अध्ययन की आवश्यकता है जिससे इन विषयों पर किया गया अध्ययन विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को उनकी कार्य योजना को बनाने में मदद करेगा। प्रस्तुत अध्ययन में शोधक ने विभिन्न जनसांख्यिकीय चरों को सम्मिलित करते हुए उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि विषय का चयन किया है। सर्वेक्षण विधि के माध्यम से शोधार्थी ने २३० विद्यार्थियों का चयन किया और सांख्यिकीय तकनीकी का प्रयोग आकडों के विश्लेषण हेतु किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि लिंग, माध्यम एवं क्षेत्र के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है और विद्यालय के प्रकार, पिता और माता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

मुख्य बिंदु :उच्चतर माध्यमिक स्तर, संवेगात्मक बुद्धि ,जनसांख्यिकीय, चर ।

परिचय

विद्यार्थी और शिक्षा का एक दूसरे से बड़ा ही गहरा संबंध है। शिक्षा मनुष्य के लिए खान–पान से भी अधिक आवश्यक है। शिक्षा प्रत्येक समाज और राष्ट्र के लिए उन्नति की कुंजी है। अज्ञानता मनुष्य के लिए अभिशाप है, शिक्षा के द्वारा ही हम सत्य और असत्य को जान पाते हैं। विद्यार्थी राष्ट्र की सबसे बड़ी ताकत और सम्पत्ति होते हैं। विद्यार्थी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है विद्या अर्थी जिसका अर्थ है, विद्या प्राप्ति का इच्छुक। मनुष्य के जीवन का वह समय, जो शिक्षा प्राप्त करने में व्यतीत होता है, 'विद्यार्थी जीवन' कहलाता है। मनुष्य जीवन के अंतिम क्षणों तक कुछ न कुछ शिक्षा ग्रहण करता ही रहता है। प्राचीन काल में पूरे जीवन को कार्य की दृष्टि से चार भागों में बांटा गया था, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। यह पहला ब्रह्मचर्य–काल ही विद्यार्थी जीवन माना जाता हैं। विद्यार्थी जीवन साधना और तपस्या का जीवन है। यह काल

एकाग्रचित्त होकर अध्ययन और ज्ञान–चिंतन का है। यह काल सांसारिक भटकाव से स्वयं को दूर रखने का काल है। विद्यार्थियों के लिए यह जीवन अपने भावी जीवन को ठोस नींव प्रदान करने का सुनहरा अवसर है, यह चरित्र–निर्माण, ज्ञान को सुदृढ़ करने का एक महत्त्वपूर्ण समय है। नए शिक्षक, नए सहपाठी और नया वातावरण मिलता है। वह समझने लगता है कि समाज क्या है और उसे समाज में किस तरह रहना चाहिए? उसके ज्ञान का फलक विस्तृत होने लगता है। पाठ्य–पुस्तकों से उसे लगाव हो जाता है। वह ज्ञान रस का स्वाद लेने लगता है जो आजीवन उसका पोषण करता रहता है। ज्ञान अर्जन की चाह रखने वाला विद्यार्थी जब विनम्रता को धारण करता है तब उसकी राहें आसान हो जाती हैं। विनम्र होकर श्रद्धा भाव से वह गुरु के पास जाता है तो गुरु उसे सहर्ष विद्यादान देते हैं। वे उसे नीति ज्ञान एवं सामाजिक ज्ञान देते हैं, गणित की उलझनें सुलझाते हैं, और उसके अंदर विज्ञान की समझ विकसित करते हैं। उसे भाषा का ज्ञान दिया जाता है,

ताकि वह अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सके। इस तरह विद्यार्थी जीवन सफलता और पूर्णता को प्राप्त करता हुआ प्रतिभाशाली बनता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होता है। इस अवस्था में विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के संवेगों का अनुभव स्वयं में करता है। यदि इन संवेगों के उचित विकास हेतु विद्यालय उन्हें उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है, तो उनकी संवेगात्मक बुद्धि को सकारात्मक दिशा दी जा सकती है। प्रस्तुत शोध–पत्र विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि को ज्ञात करने अथवा वस्तुस्थिति को जानने हेतु किया गया एक प्रयास है।

अध्ययन की सार्थकता

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था में प्रवेश कर चुके होते हैं, इस स्तर पर विद्यार्थी अनेकों प्रकार के संवेगो का अनुभव करता है, उनके संवेगों को पहचानना, उसे सही दिशा देना अत्यंत आवश्यक होता है क्योंकि संवेगात्मक अस्थिरता उसके शैक्षणिक उपलब्धि को भी प्रभावित करती है, फलस्वरूप इस अस्थिरता की स्थिति में वह अपने भविष्य हेतु उपर्युक्त योजना बनाने में सक्षम नहीं हो पाता है। वर्तमान समय में ऐसे विषयों पर अध्ययन की आवश्यकता है क्योंकि इन विषयों पर किया गया अध्ययन विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को उनकी कार्ययोजना को बनाने में मदद करेगा। प्रस्तुत लेख में शोधकर्त्री ने अनेकों पत्र पत्रिकाओं और शोधों का अध्ययन किया और पाया कि वर्तमान समय में यह अत्यंत प्रासंगिक विषय है और इस कार्य हेतु विभिन्न जनसांख्यिकीय चरो को सम्मिलित करते हुए उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन विषय चयन किया गया है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

यादव (2014)

द्वारा संवेगात्मक बुद्धि एवं सरकारी और निजी स्कूलों के छात्रों की आत्म अवधारणा का अध्ययन किया और पाया कि सरकारी और निजी स्कूल के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में काफी भिन्नता हैं वे अपने स्वंय की अवधारणा में काफी भिन्न होते हैं।

तपस (2015)

द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षणिक उपलब्धि पर अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि लिंग के आधार पर छात्राओं में संवेगात्मक बुद्धि छात्रों की तुलना में अधिक थी।

मारिया (2017)

द्वारा छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक कौशल के बीच संबंध पर अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि सामाजिककौशल की अवधारणाओं के लिए उच्च स्कोर तथा छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि के लिए कम स्कोर पाया गया।

चम्बरिन (2018)

द्वारा किशोरावस्था में शैक्षणिक उपलब्धि और संवेगात्मक बुद्धि पर अध्ययन किया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि किशोरावस्था में संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षणिक कारकों पर प्रभाव पड़ता है।

समस्या कथन

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

संक्रियात्मक परिभाषा

उच्चतर माध्यमिक स्तर

उच्चतर माध्यमिक स्तर : उच्चतर माध्यमिक स्तर का अभिप्राय 11वीं तथा 12वीं के विद्यार्थियों से है। प्रस्तुत लेख में 11वीं के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

संवेगात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि अपनी भावनाओं, संवेगों को समझना, उनका उचित तरह से प्रबंधन करना ही भावनात्मक समझ है। व्यक्ति अपनी भावनात्मक समझ का उपयोग कर सामने वाले व्यक्ति से ज्यादा अच्छी तरह से संवाद कर सकता है और ज्यादा बेहतर परिणाम पा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. लिंग के आधार पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर का पता करना।
2.गैर सरकारी एवं सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर का पता करना।
3. माध्यम के आधार पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर का पता लगाना।
4. शहरी एवं ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर का पता करना।
5. माता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर का पता लगाना।
6. पिता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर का पता लगाना।

परिकल्पनाएं

1. लिंग के आधार पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
2. गैर सरकारी एवं सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
3. माध्यम के आधार पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं हैं।
4.शहरी एवं ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
5. माता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
6. पिता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

(1) अरुण कुमार सिंह एवं श्रुति नरेन (2006) द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण दृ

शोध विधि–अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

समष्टि– अध्ययन हेतु सरायकेला खरसावां जिले के समस्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी समष्टि के रूप में है।

प्रतिदर्श– 230 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया हैं जिनमें सरकारी विद्यालयों से कुल 100 और गैर सरकारी विद्यालयों से 130 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसमें 125 छात्र तथा 105 छात्राओं को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया। विद्यार्थियों का चयन सांयोगिक विधि द्वारा किया गया है।

सांखिकीय प्रविधियां

1. माध्य
2. प्रमाणित विचलन
3. टी–अनुपात
4. सह–संबंध
5. अनोवा

अध्ययन की परिसीमाएँ

प्रस्तुत अध्ययन की निम्नलिखित परिसीमाएँ हैं :

1. प्रस्तुत अध्ययन सरायकेला खरसावां जिले के चक्रधरपुर तक सीमित है।
2. यह अध्ययन 11वीं कक्षा के विद्यार्थियों तक सीमित है।
3. प्रतिदर्श के रूप में केवल 230 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण

परिकल्पना – 1

लिंग के आधार पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या – 4.1

लिंग के आधार पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों कीसंवेगात्मक बुद्धि

लिंग	संख्या	माध्य	मनक विचलन	टी– अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्रा	125	20.78	3.219	0.288	सार्थकं नहीं
छात्र	105	21.26	3.895		

(0.05: सार्थकता के स्तर पर टी का मान 1.96)

तालिका संख्या 4.1 से स्पष्ट होता है कि लिंग के आधार पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं का संवेगात्मक बुद्धि का माध्य 20.78 तथा मानक विचलन 3.21 है, वही छात्रों का माध्य 21.26 तथा मानक विचलन 3.89 है। टी–अनुपात का मान .288 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर दिए गए टी–अनुपात तालिका मूल्य (1.96) से कम है। अतः नल परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि लिंग के आधार पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना – 2

गैर–सरकारी एवं सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या – 4.2

गैर–सरकारी एवं सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि

विद्यालय के प्रकार	संख्या	माध्य	मनक विचलन	टी– अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी	140	20.63	3.2	1.995	सार्थकं
गैर सरकारी	90	90	3.8		

(0.05 सार्थकता के स्तर पर टी–अनुपात का मान 1.96)

तालिका संख्या 4.2 से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि स्तर का माध्य 20.63 तथा मानक विचलन 3.2 है, गैर सरकारी का माध्य 21.58 तथा मानक विचलन 3.8 है। टी–अनुपात का मान 1.99 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर दिए गए टी–अनुपात तालिका मूल्य (1.96) से अधिक है। इसलिए नल परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है और कहा जा सकता है कि गैर सरकारी एवं सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना – 3

माध्यम के आधार पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या – 4.3

माध्यम के आधार पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि

शिक्षा माध्यम	संख्या	माध्य	मनक विचलन	टी– अनुपात	सार्थकता स्तर
अंग्रजी	86	21.19	2.9	0.614	सार्थक नहीं
हिंदी	144	20.89	3.8		

(0.05 सार्थकता के स्तर पर टी का मान 1.96)

तालिका संख्या 4.3 से स्पष्ट होता है कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि का माध्य 21.19 तथा मानक विचलन 2.9 है। हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों का माध्य 20.89 तथा मानक विचलन 3.8 है। टी–अनुपात का मान .614 है जो 0.05 सार्थकता के स्तर पर टी–अनुपात तालिका मूल्य (1.96) से कम है। इसलिए नल परिकल्पना को स्वीकृत किया गया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि माध्यम के आधार पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना – 4

शहरी एवं ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या – 4.4

शहरी एवं ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि

शिक्षा क्षेत्र	संख्या	माध्य	मनक विचलन	टी– अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	146	20.78	3.8	0.452	सार्थक नहीं
शहरी	84	21.26	3.04		

(0.05 सार्थकता के स्तर पर टी का मान 1.96)

तालिका संख्या 4.4 से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का माध्य 20.78 तथा मानक विचलन 3.8 है तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का माध्य 21.26 तथा मानक विचलन 3.04 है। टी–अनुपात का मान 0.452 है जो 0.05 साथर्कता के स्तर पर दिए गए टी–अनुपात तालिका मूल्य (1.96) से कम है। अतः नल परिकल्पना को स्वीकृत किया गया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नही है।

परिकल्पना – 5

माता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या – 4.5:

माता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि

शिक्षा स्तर	संख्या	माध्य	मनक विचलन	टी– अनुपात	सार्थकता स्तर
इंटरमी. एवं इंटरमी. से कम	168	20.67	3.6	2.3	सार्थक
स्नातकएवंस्नातक से अधिक	62	21.90	3.2		

(0.05 सार्थकता के स्तर पर टी का मान 1.96)

तालिका संख्या 4.5 से स्पष्ट होता है कि ऐसे विद्यार्थी, जिनकी माताओं का शैक्षणिक स्तर इंटर मीडिएट एवं इंटर मीडिएट से कम है, का माध्य 20.67 तथा मानक विचलन 3.6 है, ऐसे विद्यार्थी जिनकी माताओं का शैक्षणिक स्तर स्नातक एवं स्नातक से अधिक है, का माध्य 21.90 तथा मानक विचलन 3.2 है। टी–अनुपात का मान 2.3 है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–अनुपात तालिका मूल्य (1.96) से ज्यादा है। इसलिए नल परिकल्पना को अस्वीकृत किया गया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि माता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना – 6

पिता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 4.6

पिता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि

शिक्षा स्तर	संख्या	माध्य	मनक विचलन	टी– अनुपात	सार्थकता स्तर
इंटरमी. एवं इंटरमी. से कम	119	20.50	3.6	2.216	सार्थक
स्नातकएवंस्नातक से अधिक	111	21.53	3.3		

(0.05 सार्थकता के स्तर पर टी का मान 1.96)

तालिका संख्या 4.6 से स्पष्ट होता है कि ऐसे विद्यार्थी, जिनके पिता का शैक्षणिक स्तर इंटरमीडिएट एवं इंटरमीडिएट से कम है, का माध्य 20.50 तथा मानक विचलन 3.6 है वही ऐसे विद्यार्थी जिसके पिता का शैक्षणिक स्तर स्नातक एवं स्नातक से अधिक है, का माध्य 21.53 तथा मानक विचलन 3.3 है। टी–अनुपात का मान 2.216 है जो 0.05 सार्थक स्तर पर दिए गए टी–अनुपात तालिका मूल्य (1.96) से अधिक है। इसलिए नल परिकल्पना को अस्वीकृत किया गया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पिता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है।

शोध का निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है जबकि गैर–सरकारी एवं सरकारी विद्यालय के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया है। माध्यम तथा शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है पिता एवं माता के शैक्षिणक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि विद्यालय के प्रकार तथा अभिभावकों की शिक्षा से प्रभावित होती है।

संदर्भ सूची

- भार्गव, एस. (1977) आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- माथुर, एस. एस. (2013) शिक्षा की दार्शनिक तथा समाजिक आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- मंगल,एस.के.(2008) शिक्षा में सांख्यिकी (2एडी), पी.एच.आई. प्र.लि., जयपुर
- मंगल,एस.के.शुभ्रा.(2014) व्यावहारिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियाँ, पी.एच.आई.,प्र.लि.दिल्ली
- वालिया,जे.(2010) शिक्षा तकनीकी, अहम पाल पब्लिशर्स, पंजाब
- गुप्ता ,एस० पी० एवं गुप्ता,ए० .(2008) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान ,शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
- जायसवाल,एस० (1992) शिक्षा मनोविज्ञान, रेलवे क्रासिंग सीतापुर रोड, लखनऊ
- शर्मा, आर० ए० (2011)शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया ,आर लाल बुक ,डिपो , मेरठ
- तपस, (2015) उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षणिक उपलब्धि
- यादव (2014) संवेगात्मक बुद्धि और सरकारी और निजी स्कूलों के छात्रों की आत्म अवधारणा प्रारंभिक शिक्षा और विकास,
- चेम्बरिन, एशले (2018). किशोरावस्था में अकादमिक–संबंधित कारक और भावनात्मक बुद्धि
- मारिया, एस.(2017). छात्रों की भावनात्मक और व्यवहारिक कठिनाइयों के शिक्षकों की भावनात्मक खुफिया और छात्रों के सामाजिक कौशल का संबंधः प यूरोपीय शिक्षा जर्नल ऑफ एजुकेशन,